प्राचार्यों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी निर्णय क्षमता का प्रभाव

PAPER APPEARED IN NCERT JOURNAL BHARTIYA ADHNIK SIKSHA, OCTOBER,1992

– डॉ. ए.के.पाण्डेय
प्राचार्य,
एन.एम.डी.सी. प्रोजेक्ट विद्यालय
मझगवां, पन्ना (म.प्र.)

शिक्षा–शास्त्रियों का यह मानना है कि शिक्षा प्रशासकों की निर्णय लेने की क्षमता पर उनके सामाजिक आर्थिक स्तर का बहुत प्रभाव पड़ता है। ऐसे शिक्षा प्रशासक जिन्हें कार्य करने का एक अच्छा वातावरण मिलता है अधिकतर सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश के सागर शिक्षा संभाग में किया गया है जो कि शिक्षा के क्षेत्रा में एक अधिक विकसित संभाग नहीं माना जाता।

शिक्षा प्रशासन का इतिहास भारत में बहुत पुराना नहीं है। इस विषय पर अभी तक ज्यादा शोध कार्य भी प्रकाशित नहीं हुए हैं। कुछ अपवादों को अगर छोड़ दिया जाये तो इस क्षेत्रा में न तो ज्यादा साहित्य है और न ही मानक उपकरण। यह आश्चर्य ही की बात है कि स्कूल और कालेजों की संख्या देश में इतनी अधिक होने पर भी हम आज तक शिक्षा प्रशासकों के लिये कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं बना पाये हैं।

शिक्षा प्रशासकों पर कुछ अध्ययन किये गये हैं। शर्मा ;;1975द्ध ने अपने अध्ययन में यह बताया कि स्कूल के वातावरण का प्राचार्यों के कार्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। विन्स्टन (1976) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि शिक्षा प्रशासकों के निर्णय करने की क्षमता उनके प्रशासनिक गुणों पर निर्भर करती है। प्राचार्यों के कार्यों पर पड़ने वाले प्राचार्यों को अगर देखा जाये तो यह बात पता चलती है कि विदेशों में इस पर कम अध्ययन नहीं हुआ है। गास्टे ;;1979द्ध प्राइस ;;1976द्ध इत्यादि ने कार्य तो किये हैं लेकिन किसी ने प्रस्तुत विषय पर कोई विचार प्रकट नहीं किया है। भारत में भी इस विषय पर न के बराबर ही कार्य हुआ है।

विधि

न्यादर्शः प्रस्तुत अध्ययन में प्रत्येक खण्ड से 10 प्राचार्यों को चुना गया। इनकी औसत आयु 40 – 45 वर्ष थी।

उपकरणः

1. शिक्षा प्रशासकों के सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी पाण्डेय, ;1989द्ध यह मापनी एक मापक मापनी है जिसे 4 राज्यों के 1200 प्राचार्यों पर मानक बनाया गया है। इसमें कुल 30 पद हैं। परीक्षण द्वारा प्रत्येक पद के फलांकों का योग करके उनका आपस में सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया। पुनः स्पीरमैन ब्राउन फार्मेली सूत्रा द्वारा अर्द्धविच्छेद विधि से विश्वसनीयता गुणांक ज्ञात किया गया, जो कि ण्87 प्राप्त हुआ।

2. शिक्षा प्रशासकों के निर्णय करने की क्षमता मापनी (पाण्डेय, 1990) यह एक मानक मापनी है जिसे 4 राज्यों के 600 प्राचार्यों पर मानक बनाया गया है। इसमें कुल 5 पद हैं। परीक्षण द्वारा प्रत्येक पद के फलांकों का योग करके उनका आपस में सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया। पुनः स्पीरमैन ब्राउन फार्मेली सूत्रा द्वारा अर्द्धविच्छेद विधि से विश्वसनीयता गुणांक ज्ञात किया गया, जो ण्91 प्राप्त हुआ।

प्रशासन

परीक्षण तथा फलांकन : परीक्षण में अंकित निर्देशों को ध्यान में रखते हुए 40 प्राचार्यों को परीक्षण पत्रा भेजा गया तथा उसे पूरा करा के वापस लिया गया तथा मैन्युल में बताये गये निर्देशों के अनुसार उनका मूल्यांकन कर अंक प्रदान किये गये।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्ता : प्राप्त प्रदत्तों का सारजीयन किया गया तथा उनका मध्यमान, प्र. विचलन ज्ञात किया गया जिसे तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किया गया है जो कि मैन्युल के अनुसार था। चारों प्रकार के स्कूलों के प्राचार्यों का सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनके निर्णय करने की क्षमता का सह–सम्बन्ध ज्ञात किया गया जिसे कि तालिका 1 और 2 दर्शाया गया है।

तालिका – 1

क्र.सं.	प्रचार्यों का प्रकार	1	2	3	4
1	शासकीय विद्यालय		.34	.33*	.03*
2	अशासकीय विद्यालय			.63*	.74
3	केन्द्रीय निगमों के विद्यालय				.53
4	अशासकीय केन्द्रीय विद्यालय				

तालिका – 2

क्र.सं.	प्रचार्यों का प्रकार	1	2	3	4
1	शासकीय विद्यालय	'	.37	.12*	.13*
2	अशासकीय विद्यालय			.32	.44
3	केन्द्रीय निगमों के विद्यालय				.36
4	अशासकीय केन्द्रीय विद्यालय				

' सार्थक नहीं (शेष 0. 05 स्तर पर सार्थक)

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के प्राचार्यों से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के प्राचार्यों तथा अशासकीय केन्द्रीय ओर केन्द्रीय निगमों के विद्यालय के प्राचार्यों के सामाजिक आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह शासकीय विद्यालय के प्राचार्यों तथा केन्द्रीय नियमों के विद्यालय और अशासकीय केन्द्रीय विद्यालयों के प्राचार्यों के निर्णय करने की क्षमता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। अतः यह साबित होता है कि शासकीय विद्यालय के प्राचार्य निर्णय लेने की क्षमता में स्वतंत्रा नहीं होते हैं।

मध्यममानों के अन्तर की सार्थकता

शहरी और ग्रामीण क्षेत्राों के प्राचार्यों का उपरोक्त बेरीएबल के मध्यमान अंकों के अन्तर की सार्थकता हेतु क्रान्तिक अनुपात (सी.आर.) ज्ञात किया गया। जिसे तालिका संख्या 3 और 4 में प्रर्दशित किया गया है।

तालिका – 3

क्षेत्रा	मध्यमान	प्र.वि.	मध्यमान की प्र. त्राुटि	अन्तर त्राुटि	क्रा.अ.	सार्थकता स्तर
शहरी	56.35	8.6	.46			
				1.16	3.4	.01
ग्रामीण	41.24	7.3	.21			

तालिका – 4

क्षेत्रा	मध्यमान	प्र.वि.	मध्यमान की प्र. त्राुटि	अन्तर त्राुटि	क्रा.अ.	सार्थकता स्तर
शहरी	33.47	5.8	.41			
				1.03	8.4	.01
ग्रामीण	21.34	3.2	.23			

दोनों तालिकाओं से यह स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्राों तथा क्रान्तिक अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है जो के प्राचार्यों का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्रा से अधिक है संयोगवश नहीं है।

सन्दर्भ

1. शर्मा, एम.एल., ''स्कूल क्लाइमेट'' एण्ड इट्स रिलेशनशिप विध प्रिंसिपल्ज इफेक्टीवनेस एण्ड टीचर्स सैंटीसफेक्शन,'' जर्नल ऑफ साइकोलोजीकल रिसर्च, 21:5,1975.

2. विन्स्टन आर. टी. ''कोरीलेशन बिटवीन परसनालिटी करेक्टरीसटिक्स ऑफ चिक स्कूल एडमीनीस्ट्रेटर एण्ड डिसिजन मेकिंग स्टाइल,'' डिर्स्टेशन एक्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल **21:5, 1975**

3. गस्टि, डी.एल., ''एन एनालीसीस ऑफ इन्टरा स्कूल प्रेशर्स ऑन द लीडरशिप ऑफ सलेक्टेड स्कूल प्रिंसिपल्ज, ''डिर्स्टेशन एक्स्ट्रेक्ट इन्टरनेशनल–ए, **40:2, 1979**

4. प्राइस, एल.डब्ल्यु., ''आर्गेनाइजेशनल स्ट्रेस एण्ड जॉब सेटीसफेक्शन ऑफ पब्लिक स्कूल प्रिंसिपल्स,'' डिर्स्टेशन एक्स्ट्रेक्ट इन्टरनेशनल–ए, 31रू11ए 1971.

5. मिडन, एम.एफ. ''सोर्सेज एण्ड नेचर ऑफ प्रेशर्स एक्सेर्टड ऑन पब्लिक स्कूल एडमिनिस्ट्रेटस एण्ड स्कूल बोर्ड मेम्बर्स,'' डिर्स्टेशन एक्स्ट्रेक्ट इन्टरनेशनल–ए, 39रू9ए 1979.